University of Technology

परिसर प्रतिध्वनि

(नवोन्मेष, युवा ऊर्जा एवं अन्तःक्रिया का अभिव्यक्ति मंच)

मासिक भित्ति पत्रिका, अंक - 20, अगस्त 2026

प्रधान संरक्षक	-	श्रीमती मीनाक्षी सुराना
प्रमुख संरक्षक	-	डॉ. प्रेम सुराना
मुख्य संरक्षक	-	डॉ. अंशु सुराना
प्रेसिडेंट (वाइस चांसलर)	-	प्रो. (डॉ.) रश्मि जैन
प्रधान संपादक	-	प्रो. (डॉ.) अंकित गांधी
संपादक	-	डॉ. प्रेम कुमार
सह-संपादक	-	डॉ. मोनिका शर्मा
खेल संपादक	-	श्री यश यादव

प्रेसिडेंट(वाइस चांसलर) का संदेश ...

प्रिय विश्वविद्यालय परिवार,

विश्वविद्यालय की मासिक भित्ति पत्रिका 'परिसर प्रतिध्वनि' के अंक 20 को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका विश्वविद्यालय की शैक्षणिक, शोध, सांस्कृतिक, नवाचार एवं रचनात्मक गतिविधियों का सजीव प्रतिबिंब है और विद्यार्थियों, शिक्षकों, शोधार्थियों एवं कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा और विचारों को अभिव्यक्त करने का सशक्त मंच प्रदान करती है। शैक्षणिक सत्र 2026-27 उत्साह और नई संभावनाओं के साथ आगे बढ़ रहा है। मुझे विश्वास है कि हमारे नवप्रवेशी विद्यार्थी विश्वविद्यालय की समृद्ध परंपराओं एवं अनुशासित शैक्षणिक वातावरण से लाभान्वित होकर अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करेंगे, जबकि वरिष्ठ विद्यार्थी अपने अनुभव, नेतृत्व और प्रतिभा से विश्वविद्यालय की उपलब्धियों में नया आयाम जोड़ेंगे। अगस्त का महीना हमारे लिए विशेष महत्व रखता है, क्योंकि इस वर्ष हम भारत का 80वाँ स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं। यह अवसर हमें स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग और बलिदान को स्मरण करने के साथ-साथ राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों के निर्वहन का संकल्प लेने की प्रेरणा देता है। विश्वविद्यालय युवाओं के ज्ञान, चरित्र, नवाचार और नेतृत्व को विकसित करने का महत्वपूर्ण केंद्र है। अतः हमारा दायित्व है कि हम विद्यार्थियों में राष्ट्रप्रेम, नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को सुदृढ़ करें तथा विकसित और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में अपना योगदान दें। 'परिसर प्रतिध्वनि' विश्वविद्यालय परिवार की उपलब्धियों और रचनात्मक चेतना को एक साथ प्रस्तुत करने का सुंदर माध्यम है। मैं इसके अंक 20 के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ। आइए, स्वतंत्रता दिवस के इस पावन अवसर पर हम ज्ञान, अनुशासन, नवाचार और राष्ट्रसेवा के मार्ग पर आगे बढ़ने का संकल्प लें। आप सभी को 80वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ। जय हिंद!

प्रो. (डॉ.) रश्मि जैन
प्रेसिडेंट (वाइस चांसलर)
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

कुलसचिव का संदेश

विश्वविद्यालय की मासिक भित्ति पत्रिका 'परिसर प्रतिध्वनि' के अंक 20, अगस्त 2026 के प्रकाशन पर समस्त विश्वविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। यह पत्रिका हमारे परिसर में संचालित शैक्षणिक, शोध, सांस्कृतिक एवं रचनात्मक गतिविधियों की झलक प्रस्तुत करने के साथ-साथ विश्वविद्यालय की उपलब्धियों और सामूहिक प्रयासों को अभिव्यक्ति प्रदान करती है। अगस्त का यह महीना हमारे लिए गौरव और आत्मचिंतन का अवसर लेकर आता है। भारत के 80वें स्वतंत्रता दिवस का उत्सव हमें उन अनगिनत वीरों के संघर्ष और त्याग का स्मरण कराता है, जिनके अथक प्रयासों से हमें स्वतंत्रता प्राप्त हुई। यह दिवस केवल उत्सव मनाने का अवसर नहीं, बल्कि राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों को समझने और उन्हें पूरी निष्ठा से निभाने का संकल्प लेने का अवसर भी है। एक शिक्षण संस्थान के रूप में हमारा दायित्व है कि हम युवा पीढ़ी को ज्ञान के साथ संस्कार, संवेदनशीलता, जिम्मेदारी और नेतृत्व की भावना से भी समृद्ध करें। शैक्षणिक सत्र 2026–27 में विश्वविद्यालय की गतिविधियाँ नई गति के साथ आगे बढ़ रही हैं। मुझे विश्वास है कि विद्यार्थी अपनी जिज्ञासा, प्रतिभा और परिश्रम के बल पर नए प्रतिमान स्थापित करेंगे तथा शिक्षक एवं कर्मचारी उन्हें गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक वातावरण प्रदान करने में निरंतर सहयोग देंगे। 'परिसर प्रतिध्वनि' विचारों, उपलब्धियों और सृजनात्मक प्रयासों को एक साझा मंच देने का सुंदर प्रयास है। मैं इसके अंक 20 के प्रकाशन में योगदान देने वाले संपादक मंडल एवं सभी सहयोगियों को साधुवाद देता हूँ। आइए, स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हम ज्ञान, कर्तव्यनिष्ठा, अनुशासन और राष्ट्रनिर्माण के मूल्यों को अपने कार्यों में उतारने का संकल्प लें। आप सभी को 80वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ...

डॉ. अनूप शर्मा
कुलसचिव
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

संपादकीय

स्वतंत्रता का उत्सव, संकल्पों का नया अध्याय

प्रिय पाठकों,

'परिसर प्रतिध्वनि' का प्रत्येक अंक विश्वविद्यालय की शैक्षणिक, शोध, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं रचनात्मक गतिविधियों को आप तक पहुँचाने का प्रयास करता है। अगस्त 2026 का यह अंक इसलिए विशेष है कि यह एक ओर नए शैक्षणिक सत्र की ऊर्जा को प्रतिबिंबित करता है, वहीं दूसरी ओर भारत के 80वें स्वतंत्रता दिवस के राष्ट्रीय उत्सव का साक्षी भी है। स्वतंत्रता दिवस हमारे लिए केवल गौरव का पर्व नहीं, बल्कि आत्ममंथन और संकल्प का अवसर भी है। स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग और संघर्ष से प्राप्त स्वतंत्रता को सार्थक बनाने का दायित्व आज की युवा पीढ़ी पर है। विश्वविद्यालय इस दायित्व के निर्वहन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ज्ञान, अनुसंधान, नवाचार, अनुशासन, संवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व से संपन्न युवा ही राष्ट्र की प्रगति को नई दिशा दे सकते हैं।

शैक्षणिक सत्र 2026–27 नई उम्मीदों और संभावनाओं के साथ आगे बढ़ रहा है। नवप्रवेशी विद्यार्थियों के लिए यह परिसर सीखने, स्वयं को पहचानने और अपने सपनों को आकार देने का अवसर है, वहीं वरिष्ठ विद्यार्थी अपने अनुभव और नेतृत्व से विश्वविद्यालय की सकारात्मक परंपराओं को आगे बढ़ाने में योगदान दे सकते हैं। वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। तकनीकी दक्षता के साथ रचनात्मक चिंतन, उद्यमिता, शोध, नवाचार और मानवीय मूल्यों का समन्वय आवश्यक हो गया है। हमारा प्रयास होना चाहिए कि विद्यार्थी कक्षा की सीमाओं से बाहर निकलकर साहित्य, खेल, संस्कृति, सामाजिक सेवा और सृजनात्मक गतिविधियों में भी सक्रिय भागीदारी करें। 'परिसर प्रतिध्वनि' इसी सामूहिक चेतना और रचनात्मकता को अभिव्यक्ति देने का माध्यम है। हमें विश्वास है कि विश्वविद्यालय परिवार का सहयोग इसे निरंतर अधिक सार्थक और प्रभावी बनाएगा। इस अंक के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी अधिकारियों, विभागाध्यक्षों, संकाय सदस्यों, कर्मचारियों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों एवं संपादकीय मंडल के प्रति हम हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। आइए, स्वतंत्रता के गौरव और नए सत्र के उत्साह को साथ लेकर ज्ञान, नवाचार, अनुशासन और राष्ट्रसेवा के मार्ग पर आगे बढ़ने का संकल्प लें।

जय हिंद!

डॉ. प्रेम कुमार
सह-आचार्य, हिंदी विभाग
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

नोट: आप सभी से विनम्र निवेदन है कि अपने बहुमूल्य सुझाव और प्रतिक्रियाएँ अवश्य प्रेषित करें, जिससे आगामी अंकों को और अधिक समृद्ध एवं उपयोगी बनाया जा सके।

प्लेसमेंट ड्राइव में 15 विद्यार्थियों का चयन

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एवं रीजनल पॉलिटेक्निक कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में पॉलिटेक्निक विद्यार्थियों के लिए एक दिवसीय प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन किया गया। यह आयोजन विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध कराने तथा उन्हें औद्योगिक क्षेत्र की आवश्यकताओं से परिचित कराने के उद्देश्य से किया गया। प्लेसमेंट ड्राइव में विश्वविद्यालय सहित विभिन्न महाविद्यालयों के लगभग 55 विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। आयोजित प्लेसमेंट प्रक्रिया के अंतर्गत आनंद समूह द्वारा विद्यार्थियों के चयन की प्रक्रिया पूरी की गई। चयन प्रक्रिया में विद्यार्थियों की योग्यता, क्षमता और उनके व्यावसायिक कौशल का आकलन किया गया। प्रक्रिया के उपरांत कुल 15 विद्यार्थियों का अंतिम चयन किया गया। चयनित विद्यार्थियों को आईटीआई ऑपरेटिंग इंजीनियरिंग ट्रेनिंग पद के लिए अवसर प्रदान किया गया है। चयनित विद्यार्थी अपनी सेमेस्टर परीक्षाएँ पूर्ण करने के पश्चात संबंधित कंपनी में कार्यभार ग्रहण कर रहे हैं। प्री-प्लेसमेंट टॉक के माध्यम से विद्यार्थियों को यह समझने का अवसर मिला कि शैक्षणिक ज्ञान को व्यावहारिक कौशल के साथ जोड़कर रोजगार के क्षेत्र में बेहतर संभावनाएँ हासिल की जा सकती हैं। इस प्रकार का आयोजन विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को बढ़ाने के साथ-साथ उन्हें वास्तविक औद्योगिक वातावरण के लिए तैयार करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

संस्था के डायरेक्टर डॉ. अशोक सिंह शेखावत ने चयनित एवं प्रतिभागी विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों के लिए इस प्रकार के रोजगारपरक अवसर उनके व्यावसायिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। वहीं वाइस चेयरमैन डॉ. अंशु सुराणा ने चयनित विद्यार्थियों को बधाई देते हुए प्लेसमेंट ड्राइव को उनके करियर के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर बताया। उन्होंने विद्यार्थियों को भविष्य में भी अपने तकनीकी ज्ञान, कौशल एवं कार्यक्षमता को निरंतर विकसित करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय एवं संस्था विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ रोजगारोन्मुखी अवसर उपलब्ध कराने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। प्लेसमेंट ड्राइव की सफलता विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं संस्था के सामूहिक प्रयासों का परिणाम रही। इस आयोजन से चयनित विद्यार्थियों को अपने करियर की नई शुरुआत करने का अवसर मिला है। साथ ही अन्य विद्यार्थियों को भी यह प्रेरणा मिली कि वे अपनी शिक्षा के साथ तकनीकी एवं व्यावहारिक कौशल को विकसित करें और भविष्य में उपलब्ध रोजगार के अवसरों के लिए स्वयं को बेहतर ढंग से तैयार करें। विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय प्रशासन ने भविष्य में भी विद्यार्थियों के लिए ऐसे प्लेसमेंट एवं करियर मार्गदर्शन कार्यक्रम आयोजित करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

एंटी-रैगिंग सप्ताह का भव्य शुभारंभ

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, वाटिका, जयपुर में दिनांक 12 अगस्त 2026 को सेमिनार हॉल-2 में एंटी-रैगिंग सप्ताह का भव्य शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को रैगिंग जैसी अनुचित एवं हानिकारक गतिविधि के दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करना तथा विश्वविद्यालय परिसर में सुरक्षित, सौहार्दपूर्ण, अनुशासित एवं सम्मानजनक वातावरण सुनिश्चित करना रहा। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के अधिकारी, शिक्षक, कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में नवागंतुक विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ सुश्री मनीषा यादव द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना से हुआ। इसके पश्चात डॉ. रजनी माथुर ने उपस्थित अतिथियों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का स्वागत किया। उन्होंने एंटी-रैगिंग सप्ताह के उद्देश्य एवं महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विश्वविद्यालय में प्रत्येक विद्यार्थी को भयमुक्त और सकारात्मक वातावरण में शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। उन्होंने विद्यार्थियों से अनुशासन का पालन करने तथा एक-दूसरे के प्रति सहयोग एवं सम्मान की भावना बनाए रखने का आह्वान किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय की प्रेसिडेंट प्रो. (डॉ.) रश्मि जैन ने नवागंतुक विद्यार्थियों का आत्मीय स्वागत किया। उन्होंने विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय में उपलब्ध शैक्षणिक अवसरों एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 की भावना से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल पाठ्यक्रम पूरा करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, नेतृत्व क्षमता, रचनात्मकता और सामाजिक उत्तरदायित्व का समग्र विकास करना है। उन्होंने

विद्यार्थियों को रैगिंग से पूरी तरह दूर रहने और परिसर में परस्पर सम्मान, सहयोग तथा सकारात्मक व्यवहार को बढ़ावा देने का संदेश दिया। इस अवसर पर प्रेसिडेंट ने उपस्थित विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को एंटी-रैगिंग शपथ भी दिलाई। शपथ के माध्यम से सभी ने विश्वविद्यालय परिसर को रैगिंग-मुक्त रखने तथा किसी भी प्रकार की रैगिंग की घटना का समर्थन या सहभागिता न करने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम में प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना ने भी विद्यार्थियों को संबोधित किया। उन्होंने अनुशासन, नैतिक मूल्यों और स्वस्थ शैक्षणिक वातावरण के महत्त्व पर बल देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय में सकारात्मक वातावरण का निर्माण सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने नवागंतुक विद्यार्थियों से वरिष्ठ विद्यार्थियों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करने तथा वरिष्ठ विद्यार्थियों से नए विद्यार्थियों का सहयोग एवं मार्गदर्शन करने का आह्वान किया। कार्यक्रम का मंच संचालन डॉ. प्रेम कुमार ने प्रभावी ढंग से किया। अंत में डॉ. सीता राम माली ने सभी अतिथियों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। एंटी-रैगिंग सप्ताह के शुभारंभ कार्यक्रम ने विद्यार्थियों को यह स्पष्ट संदेश दिया कि रैगिंग किसी भी रूप में स्वीकार्य नहीं है। विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा विद्यार्थियों की सुरक्षा, गरिमा और सम्मान को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए ऐसे जागरूकता कार्यक्रम निरंतर आयोजित किए जा रहे हैं। कार्यक्रम ने विद्यार्थियों में अनुशासन, संवेदनशीलता, भाईचारे और जिम्मेदारी की भावना को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

देशभक्ति एवं उत्साह के साथ मनाया गया 80वां स्वतंत्रता दिवस समारोह

दिनांक 15 अगस्त 2026 को यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, वाटिका, जयपुर में 80वां स्वतंत्रता दिवस समारोह देशभक्ति एवं उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ वंदे मातरम् के सामूहिक गायन एवं ध्वजारोहण के साथ हुआ। विश्वविद्यालय परिवार के शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने राष्ट्र के प्रति सम्मान एवं एकजुटता की भावना के साथ समारोह में सहभागिता की। विश्वविद्यालय की प्रेसिडेंट डॉ. रश्मि जैन ने स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि स्वतंत्रता का अर्थ केवल अधिकार प्राप्त करना नहीं, बल्कि स्वतंत्र रूप से सोचने, नवाचार करने और राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाने की स्वतंत्रता भी है। उन्होंने कहा कि हमें अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों का भी निर्वहन करना चाहिए तथा एकता, संप्रभुता और राष्ट्र की अखंडता का सदैव ध्यान रखना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों से तकनीकी रूप से सक्षम एवं आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का सपना देखने और उसे साकार करने के लिए प्रयास करने का आह्वान किया। उन्होंने रास्ते, चिन्हों एवं सार्वजनिक स्थलों के प्रति सम्मान तथा जिम्मेदार नागरिक व्यवहार पर भी जोर दिया।

प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी ने कहा कि 80वां स्वतंत्रता दिवस हमें अतीत को याद करने के साथ-साथ भविष्य की ओर देखने का अवसर प्रदान करता है। उन्होंने वर्ष 2047 के विकसित भारत के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए युवाओं से राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान देने का आह्वान किया। उन्होंने विद्यार्थियों को सिविक सेंस मतलब नागरिक चेतना के महत्व के बारे में बताते हुए कहा कि जिम्मेदार एवं जागरूक नागरिक ही सशक्त भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

कुलसचिव डॉ. अनूप शर्मा, परीक्षा नियंत्रक डॉ. कमल किशोर जांगिड़, कॉर्डिनेटर डॉ. सीताराम माली एवं कॉर्डिनेटर डॉ. प्रेम कुमार ने भी स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं देते हुए विद्यार्थियों एवं विश्वविद्यालय परिवार को राष्ट्रहित में कार्य करने तथा अपने दायित्वों का ईमानदारी से निर्वहन करने का संदेश दिया।

प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना ने अपने संदेश में स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि स्वतंत्रता हमें अपने अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का निर्वहन करने की प्रेरणा देती है। उन्होंने विद्यार्थियों से राष्ट्र की एकता, अखंडता एवं संप्रभुता का सम्मान करते हुए अनुशासन, सद्भाव और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना के साथ आगे बढ़ने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि युवा शक्ति ही विकसित एवं सशक्त भारत की आधारशिला है और विद्यार्थियों को अपने ज्ञान, कौशल एवं प्रतिभा का उपयोग राष्ट्र निर्माण में करना चाहिए। समारोह के दौरान विद्यार्थियों ने देशभक्ति से ओत-प्रोत सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर वातावरण को राष्ट्रभक्ति से भर दिया। प्रियांशु ने देशभक्ति गीतों पर नृत्य एवं तनीषा मीणा ने भारत दर्शन विषय पर कविता प्रस्तुति दी गई। लकी शर्मा ने अपनी प्रस्तुति से शहीदों को नमन किया जबकि रियान आफरीन ने देशभक्ति से ओत-प्रोत भाषण प्रस्तुत कर उपस्थित सभी लोगों में राष्ट्रप्रेम की भावना को और प्रबल किया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. सीताराम माली ने सभी अतिथियों, शिक्षकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। समारोह का समापन राष्ट्र के प्रति समर्पण, एकता एवं जिम्मेदार नागरिक बनने के संकल्प के साथ हुआ।

स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाए रखने में अधिकारों एवं कर्तव्यों की प्रासंगिकता

भूमिका

स्वतंत्रता मनुष्य के व्यक्तित्व-विकास की आधारशिला है। यह केवल बंधनों से मुक्ति का नाम नहीं, बल्कि व्यक्ति को अपने विचार व्यक्त करने, अपनी क्षमता विकसित करने, निर्णय लेने तथा सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अवसर प्रदान करती है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में स्वतंत्रता को मौलिक अधिकारों के माध्यम से संवैधानिक संरक्षण प्राप्त होता है। किंतु केवल अधिकारों की उपलब्धता से स्वतंत्रता सुरक्षित नहीं रह सकती। अधिकारों के साथ कर्तव्यों का संतुलन भी आवश्यक है। यदि व्यक्ति अपने अधिकारों का प्रयोग दूसरों के अधिकारों और सामाजिक हितों की उपेक्षा करते हुए करे, तो स्वतंत्रता स्वेच्छाचारिता में परिवर्तित हो सकती है। अतः अधिकार स्वतंत्रता की रक्षा करते हैं, जबकि कर्तव्य स्वतंत्रता को अनुशासित और स्थायी बनाते हैं।

अधिकार और स्वतंत्रता का संबंध

अधिकार वे सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियाँ हैं जो व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक होती हैं और जिन्हें राज्य तथा समाज मान्यता एवं संरक्षण प्रदान करते हैं। भारतीय संविधान ने समानता, स्वतंत्रता, जीवन एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता, धार्मिक स्वतंत्रता तथा संवैधानिक उपचार जैसे मौलिक अधिकार प्रदान किए हैं। अधिकार व्यक्ति को राज्य की मनमानी से सुरक्षा प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, विचार एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नागरिकों को सरकार की नीतियों की आलोचना करने तथा अपने विचार व्यक्त करने का अवसर देती है। इसी प्रकार समानता का अधिकार सामाजिक भेदभाव को चुनौती देता है और व्यक्ति की गरिमा को सुरक्षित करता है। इस प्रकार अधिकार स्वतंत्रता के लिए एक संवैधानिक सुरक्षा-कवच का कार्य करते हैं।

कर्तव्यों की भूमिका

अधिकारों के साथ कर्तव्यों का निर्वहन उतना ही आवश्यक है। नागरिकों का कर्तव्य है कि वे संविधान, राष्ट्रीय प्रतीकों और लोकतांत्रिक संस्थाओं का सम्मान करें, देश की एकता एवं अखंडता की रक्षा करें, सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा करें, वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करें तथा पर्यावरण की रक्षा में योगदान दें। यदि प्रत्येक नागरिक केवल अपने अधिकारों की मांग करे, लेकिन अपने सामाजिक दायित्वों से विमुख हो जाए, तो लोकतंत्र का संतुलन बिगड़ सकता है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति की गरिमा को जानबूझकर ठेस पहुँचाए या हिंसा और घृणा को बढ़ावा दे। इसी प्रकार विरोध करने का अधिकार लोकतंत्र की शक्ति है, लेकिन शांतिपूर्ण एवं संवैधानिक तरीके से विरोध करना नागरिक का दायित्व भी है।

अधिकार और कर्तव्य : एक-दूसरे के पूरक

अधिकार और कर्तव्य को एक-दूसरे का विरोधी नहीं, बल्कि परस्पर पूरक समझना चाहिए। व्यक्ति को बोलने का अधिकार है, तो दूसरों को भी अपनी बात कहने का अधिकार है। व्यक्ति को धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त है, तो उसका कर्तव्य है कि वह दूसरे धर्मों और उनकी स्वतंत्रता का सम्मान करे। नागरिक को सार्वजनिक संसाधनों का उपयोग करने का अधिकार है, तो उसकी जिम्मेदारी है कि वह सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान न पहुँचाए। यही संतुलन स्वतंत्रता को वास्तविक अर्थ प्रदान करता है। अधिकार व्यक्ति को 'मैं क्या कर सकता हूँ' का उत्तर देते हैं, जबकि कर्तव्य यह बताते हैं कि 'मुझे क्या करना चाहिए।' जब दोनों के बीच संतुलन स्थापित होता है, तभी स्वतंत्रता जिम्मेदार स्वतंत्रता बनती है।

समकालीन संदर्भ में प्रासंगिकता

आज के डिजिटल युग में अधिकारों और कर्तव्यों का संतुलन और अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को व्यापक बनाया है, लेकिन साथ ही फर्जी समाचार, अफवाह, घृणात्मक सामग्री और चरित्र-हनन जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। इसलिए डिजिटल स्वतंत्रता के साथ तथ्य-जांच, दूसरों की निजता का सम्मान और जिम्मेदार अभिव्यक्ति आवश्यक है। इसी प्रकार लोकतांत्रिक समाज में सरकार की आलोचना नागरिक का अधिकार है, लेकिन लोकतांत्रिक संस्थाओं में विश्वास बनाए रखना और संवैधानिक मर्यादाओं का पालन करना भी आवश्यक है। स्वतंत्रता तभी सार्थक है जब वह व्यक्ति की गरिमा और सामाजिक व्यवस्था—दोनों की रक्षा करे।

निष्कर्ष

स्वतंत्रता लोकतंत्र की आत्मा है, अधिकार उसके सुरक्षा-कवच हैं और कर्तव्य उसकी आधारशिला। केवल अधिकारों पर आधारित समाज असंतुलित हो सकता है; वहीं केवल कर्तव्यों पर अत्यधिक बल व्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित कर सकता है। इसलिए लोकतांत्रिक व्यवस्था की सफलता अधिकार और कर्तव्य के संतुलित समन्वय में निहित है। वास्तव में स्वतंत्रता का सर्वोच्च रूप वह है जिसमें व्यक्ति अपने अधिकारों का आनंद लेते हुए दूसरों के अधिकारों का सम्मान करे और अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करे। इसलिए कहा जा सकता है कि- "अधिकार स्वतंत्रता को जन्म देते हैं, कर्तव्य उसे दिशा देते हैं और दोनों का संतुलन उसे अक्षुण्ण बनाए रखता है।" यही जिम्मेदार नागरिकता और सुदृढ़ लोकतंत्र की पहचान है।

डॉ. सीता राम माली
सह-आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर